ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 198-200

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

# भारतीय चित्रकला में बुद्ध का सजीव सारगर्भित चित्रण

1. अंजलि
2. प्रो0 अलका तिवारी

1. शोध अध्येत्री, 2. प्रोफेसर– एन.ए.एस. कालेज, मेरठ, समन्वयक–ललित कला विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0) भारत

Received-02.12.2023, Revised-07.12.2023, Accepted-11.12.2023 E-mail: aavyasagar1993@gmail.com

***सारांशः*** ***भारतीय चित्रकला, वास्तुकला एव शिल्पकला में प्रत्येक काल के विभिन्न प्रभाव दिखाई देते है। उससे प्रत्येक काल कम की अपनी पहचान अलग है। शैशुनाग, नन्द, मौर्यकाल, शुगकाल, कुषाण आदि कालखण्डों के प्रभाव में आसानी से पहचाने जा सकते है, किन्तु काल खण्डों के आलावा इन सभी पर जो सुस्पष्ट प्रभाव पड़ा वह बुद्ध का है। आज के समय की कला में यह कहना गलत नही कि जहां कला, वहाँ बुद्ध। यह का समय है, जिसे नाकारा नही जा सकता। भारत के अलावा नेपाल भूटान, अफगानिस्तान, चीन, जापान, आस–पास के देश इस प्रभाव से बच नही पाये है। आस पास के पड़ोसी देशों में भी बुद्ध का प्रभाव देखते ही बनता है।***

***कुंजीभूत शब्द– भारतीय चित्रकला, वास्तुकला, मौर्यकाल, कालखण्डों, आस–पास, पुरोहितवादी प्रवृत्ति, कलाकारों, उदगम।***

**अध्ययन का उदेश्य–** मेरे इस अध्ययन ओर लेख का उदेश्य यह है कि बौद्ध कला व बुद्ध से सम्बन्ध रखने वाली कलाओं को तथा उसे सम्बन्धित गुफाओं का ज्ञान सभी के सम्मुख रखना।

**बौद्ध कला का उदगम–** ईसा से लगभग छः शतक पूर्व का भारत कला में बहुत बुरी स्थिति में रहा। राजनीति दृष्टि से यह शिशुनाग वंश की राज्य स्थिति का समय था। साहित्यिक दृष्टि से यह सूत्रग्रन्थों एवं दर्शन की विभिन्न शाखाओं की भूमिका का निर्माणकाल था और धार्मिक दृष्टि से जैन–बौद्धों का जन्म समय। बाहम्ण धर्म की तत्कालीन पुरोहितवादी प्रवृत्ति के विरोध में जैन और बौद्ध धर्म उदित हुए, जिसका प्रतिनिधि किया महावीर स्वामी और महात्मा बुद्ध के। भगवान बुद्ध के अनुयायियों में एक वर्ग व्यापारियों व धनिकों का भी था जिसके कारण हमे तत्कालीन असंख्य विहरों के निर्माण तथा कलापूर्ण भव्य स्तूपो का निर्माण करवाया। मध्यप्रदेश में साची और मरहूत दक्षिण में अमरावती और नागार्जुन कोडा तथा पश्चिम मे काले और भज के चैत्यो एवं स्तूपो इस प्रसंग में उद्धत किया गया। चारिकाओ के रूप में भ्रमण करने वाले दया ममता और करूणा के प्रतीक भिक्षु भिक्षुणियों के आवास के लिए अशोक जैसे गृहस्थ उपासको ने इस चैत्य, स्तूपों का तथा विहरों का निर्माण करवाया था। और इस भी में भव्य जातक कथाओ का अंकन तथा मूर्तिशिल्पों को बनावाया।

तारानाथ जो सोलवही शताब्दी का तिब्बती इतिहासकार था, ने यह उल्लेख किया है कि जहां–जहां बौद्ध धर्म फैला वहां वहां दक्ष चित्रकार पाये गए यह बात विशेष रूप से भारत वर्ष के चित्रकारों ये देखी जा सकती है यद्यपि बहुत सी सुदंर कला कृतिया काल के गाल में समा गई है, फिर भी बौद्ध, भगवत तथा शैव कलाकारों की कुछ समुचित कृतियां कलाकारों की निपुणता तथा कारीगरी की दक्षता की गाथा को छिपाये आज भी जीर्ण–शीर्ण अवस्था में प्राप्त है।

बौद्ध धर्म विशेष रूप में चित्रात्मक है आरम्भिक समय से बौद्ध धर्म की हीनयान शाखा बलवती थी। पहले बौद्ध धर्म दो भागों में विभाजित था क्रमशः हीनयान– महायान। हीनयान में पहले धर्म के प्रचार प्रसार के लिए प्रतीक रूप छत्र, मुकुट, पगडी, चरण, चक्र आदि को पूजा जाता था। तत्पश्चात महायान के अस्तीत्व में आने पर बुद्ध को मर्तियो में रूपात्रण किया जाये लगा।

भारत में उत्तर पश्चिम में इसी बौद्ध कला के साथ यूनान और रोम की कथा–शैलियों का समिश्रण होने से गांधाए मथुरा नामक नवीन कला शैली की उत्पत्ति हुई। गांधार शैली मुख्यतः विदेशी शैलियों से प्रभावित रही जबकि मथुरा शैली एक पूर्ण विकसित भारतीय परम्परागत शैली थी।

**गांधार शैली में बुद्ध की छवि–** कनिष्क के सम्राट बनते ही महायान बौद्ध धर्म का प्रादुर्भाव हुआ। इसके फलस्वरूप भगवान बुद्ध की छवियों मर्ति या चित्र के रूप में अकिंत जी जाने लगी। बुद्ध के अंकन पर कोई धार्मिक प्रतिबंध नही था। इस समय बुद्ध की मर्तिया बनवायी गई जो पेशावर, रावल पिडी तक्षशिला आदि क्षेत्रों में बनाई जाती थी। यह यूनानी व रोमन कला का समिश्रण माना जाता है इसकी खोज डा0 लिथर, ने की। यह काले स्लेटी पत्थर से बनी मूर्तिया है। प्रत्येक शिल्प खण्ड में बुद्ध प्रतिभा को मुख्य स्थान दिया गया है। इस शैली में मावन पाचं ताल का माना गया है उसी आधार पर बुद्ध के अंग–अंग को निमयबद्धता से बनाया गया है। वस्तुत गांधार के शिल्पों में भारतीय शारीरिक गठन है तथा उसका ग्रीकी ढ़ग से रूपान्तरण किया गया है इस समय के कलाकारो ने बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित कथाओं तथा जातक कथाओं पर मूर्तिया बनाई जैसे वैसान्तर जातक, श्याम जातक, दीपाकर जातक, किन्नर जातक आदि। सांची, भरहुत व अमरावती में जो उल्लेख मिलता है, वह इसी शैली में अंकित है। इसके अलावा यहा मुद्राए जैसे अभयन्मुद्रा, ज्ञानमुद्रा,ध्यान मुद्रा या धर्म चक्र प्रवर्तन मुद्रा आदि बनी है, परन्तु वेशभूषा अलकरण विदेशी है। बुद्ध की शारीरिक मुद्रा बहुत कठोर तथा माधुर्ययुक्त है गाधान्र शैली में बुद्ध के घुघराले केश दिखाये गये है।

**मथुरा शैली में बुद्ध की छवि–** वैसे तो कुषाण काल मे ही मथुरा शैली भी पनपती है और निसदेंह रूप से मथुरा के सम्प्रदाय को, सर्वप्रथम बुद्ध की पूर्णरूपेण भारतीय प्रतिभा बनाने का श्रेय प्राप्त है यह मत भारतीय ही नही, अपितु आधुनिक पाश्चात्य विद्वानों का भी है। मथुरा शैली के शिल्पो में बुद्ध मूर्ति में बुद्ध का साकार रूप श्रेष्ठ ढंग से उमेरा गया है मथुरा शैली की मुर्तियों का विषय मुख्यतमः बौद्ध ही है। सफेद चित्तिदार लाल खादार पत्थर से बनाई गई है इसी कारण यह शिल्प भरे हुए।

**तारानाथ के अनुसार बौद्धकालीन शैलिया–** सोलहवी शताब्दी में तिब्बती इतिहासकार लामा तारानाथ ने इस विषय पर पर्याप्त

**अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

मात्रा में प्रकाश डाला है, परन्तु उसके उल्लेख स्पष्ट नही है। तारानाथ से आरम्भिक बौद्धकाल की तीन शैलिया मानी है: (1) देवशैली (2) नाग शैली (3) दक्ष शैली।

देव शैली मगध से प्रचालित थी, दक्ष शैली का प्रचलन सम्राट अशोक के समय ये था व नाग के प्रसिद्ध आचार्य नागार्जुन के समय तीसरी सदी रही इस प्रकार बौद्ध कला का प्रमुख क्षेत्र मध्यदेशीय, पश्चिमीय व पूर्वीय क्षेत्र है।

भारत में बौद्धकला की महान विरासत भित्तिचित्रों के रूप में सुरक्षित है। यह चित्र भारत के ओर छोर तक फेले है। बौद्धकला का महान उदाहरण अजन्ता है भारत के भित्तिचित्रों की अलग परम्परा है। भारतीय चित्रकला के उज्जवल इतिहास की शुरूआत भित्तिचित्रों से ही होती है। दुनिया में किसी भी क्षेत्र जिनमें भगवान बुद्ध को बहुत श्रेष्ठता के साथ दर्शाया गया है। जिनका विवरण इस प्रकार का है।

**अजन्ता की गुंफाए–** सुन्दर रूप और कल्पना की मुदु–मुस्कान करूणा, और शान्ति के ऑचल से आवृत अजन्ता की आकृतियां अपने अवगुन्ठन में न जाने कितनी सरस भावनाओं और कलाकारों की अन्तर अनुभूतियों की उपलब्धियां छिपाये अपने अस्तित्व से प्राचीन भारतीय कला इतिहास को स्वर्ण प्रष्ठिका लगाऐ हुऐ है तथा चिरशन्ति के साथ अपने अमरत्व का सदेश दे रही है। अजन्ता महाराष्ट्र के औरगाबाद जिले में जलगांव रेलवे स्टेशन के फरीदापुर ग्राम में अजिष्ठा नामक स्थान पर है। अजिष्ठा के नाम पर इसका नाम अजन्ता पडा। अजन्ता की घाटी मे सतपुडा की पहाडी को काटती बाघोरा नदी अनके घुमाव लेती हुई बहती है। ये गुफाऐं पूर्व से पश्चिम भी ओर है 600 गज की लम्बाई में फैली है। गुफाओं में बनी मूर्तियों से लेकर भीतर में की गई चित्रकारी अदभूत व आश्चर्यजनक है। यह गुफाऐं वास्तुकला, मूर्तिकला तथा चित्रकरो का उत्तम संगम है अजन्ता की खोज का आर्मी ऑफिसर जॉन स्मिथ व उसके दल से 28 अप्रैल सन् 1819 में की थी। अजन्ता के चित्रों की प्रथम प्रदर्शनी क्रिस्टल पैलेस ब्रिटेन मे की गई परन्तु सभी जल कर बर्बाद हो गई सिर्फ 5 ही शेष बची थी। 1910–19–11 में लेडी हेरिघम भारत आई उन्होने भारतीय चित्रकारो के साथ मिलकर अजन्ता की अनुकृतिया तैयार की। जिसमे नंद लाल बसु, असित कुमार हल्दार, के0 वेकटप्पा एस0एन0 गुप्ता, कुमारी लार्चर आदि शामिल थे। यूनेस्को द्वारा 1954 ई0 में पेंटिग ऑफ द अजन्ता केत्स के नाम से अजन्ता के चित्रों को प्रकाशित किय गया। 1983 में विश्व विरासत सूची में अजन्ता की गुफाओ को शामिल किया गया। वर्तमान में 30 गुफाए है जिसमे 6 गुफाओं (1,2,9,10,16,17) में चित्र शेष बचे है। चैत्य गुफा है (9,10,2,19,26,29) तथा बाकी सभी बिहार गुफाए है। अजन्ता की गुफा 900 वर्षो में बनकर तैयार हुई तथा इसने कई राजवंशो के काल को देखा। जिसमें एक सातवाहन, वाकाटक, गुप्त चालुक्य प्रमुख है। अजन्ता में बुद्ध के जीवन को जातक कथाओ के द्वारा चित्रित किया गया है आलेखन अलकरण में भी सौन्दर्यता उकेरी गई है। अजन्ता गुफा में प्रमुख चित्र में गुफा 1 शिवि जातक, शखपाल जातक बौधिसत्व पदमपाणि बोधिसत्व वज्रपाणि आदि। गुफा–2 माया की सव्पन, सहस्त्र बुद्ध का जन्म गुफा– 10 छदंत जातक, श्याम जातक बोधिवृक्षपूजा। गुफा – 9 उडती हुई अप्सराऐ, स्तूप पूजा आदि है। गुफा– 16 महाउमंग जातक, सुता सोम जातक, मरणासन्न राजकुमारी नंद की दीक्षा, वृद्ध रोगी जातक। गृह त्याग। सुजाता की कथा, बुद्ध की पाठशाला आदि। गुफा– 17 छंतद जातक, श्याम जातक, हस्ति जातक, सोम जातक महाकपि जातक, वेषातर जातक, शिवि जातक मृगजातक आदि प्रमुख है। चित्रों मे श्रृंगार करती राजकुमारी, माता पुत्र, भिक्षुबुद्ध प्रमुख है।

**बाघ गुफाए–** भारतीय चित्रकला में गुफाओ की चित्रकारी का यह प्रारूप हमे बाघ की कला मे देखने को मिलता है। बाघ की यह गुफाए मध्य प्रदेश मे धार जिला के अन्तर्गत विध्य श्रेणी के उन भागों में है, जहां भीलो की बस्ती व घना जगंल है। इन गुफाओ को बौद्ध भिक्षुओं के आवास व बुद्ध उपदेशों के प्रवचन श्रवण के लिए बनवाया गया था। नर्मदा नदी घाटी में यह गुफा आती है। 150 फीट ऊचाई पर स्थित है यहां पर 9 गुफाए है : क्रमशः पहली गुफा, गृहगुफा है जो कि नष्ट हो चुकी है। दूसरी गुफा पाण्डवो की गुफा कहलाती है, यह सबसे बडी गुफा है। इसी गुफा मे महाराज सुबन्धु का ताम्रपत्र मिला था। तीसरी गुफा का नाम हाथीखाना है। इस गुफा में अच्छे भित्रि चित्र है। चौथी गुफा को रंग महल कहा जाता है। इसकी छत के दोनों ओर मकरवाहिनी देविया अंकित है पांचवी गुफा में भिक्षुओ का बैठने का स्थान था बाकी 6,7,8,9 गुफा स्वतः ही नष्ट हो चुकी है। बाघ की गुफाओं के समय का कोई लिखित साक्ष्य नहीं मिलता है। महाराज सुबन्धु के ताम्रपत्र के अनुसार निर्माण काल का समय लगभग चौथी या पांचवी शताब्दी रहा होगा। इन गुफओं की खोज 1818 में लेफ्टीनेट डेंजर फील्ड नामक विद्धान ने की गुफाओं के चित्रो को सात भागों में विभाजित किया गया है। यह चित्र चौथी और पाचवी गुफाओं की दीवार पर बने है। प्रमुख चित्र शोकाकुल स्त्री, आभूषण धारी पुरूष गददी पर बैठकर मंत्रणा कर रहे है। कुछ देव पुरूषों को आकाश में विचरण करते दिखाया है। 6 व्यक्तियों का समूह है पांच गायिकाए, नृत्यागना, 17 घुडसंवार।

**बादामी गुफा–** बम्बई के अइहोल स्थान पर यह गुफाए स्थित है यह चार गुफॉए चालुक्य राजाओं द्वारा बनावाई गइ। यहां के चित्रों में नारी सौन्दर्य चित्रण बहुत उच्चकोटि का हुआ है। बादामी की खोज का श्रेय स्टेला क्रैमरिश को जाता है। श्री कार्ल खण्डालावाला ने 1938 में अपनी पुस्तक इण्डियन स्कल्पचर एण्ड पेटिंग में बादामी का एक रंगीन चित्र प्रकाशित किया।

**सित्तनवासल गुफा–** यह गुफा मद्रास वर्तमान में तमिलनाडु राज्य में पुदुकोहई जिले में कावेरी नदी के किनारे स्थित है यह यह पत्थर को तराशकर बनाना गया है। इन चित्रों की शैली अजन्ता से मिलती है। इन चित्रों की भाव प्रदर्शन को मुद्रा अति ही मोहक स्थिति में चित्रित है इसके खोजकर्ता प्रो0 दुब्रील को माना जाता है।

**सिगिरिया गुफा–** यह गुफा श्री लंका में स्थित है 5 वी शताब्दी के आस–पास कश्यप प्रथम ने इसे बनवाया था। इसकी खोज 1830 मेजर फोमर्स ने की। यहां कुल 6 गुफा थी, परन्तु अब गुफा ए और बी में रूपायनी महिलाओं के चित्रप्राप्त है। इसकी प्रतिलिपिया सर्वप्रथम 1889 में प्रो0 पुरे ने बनई गुफा का आकार आराम करते सिह के सामान है। यह गुफा बौद्ध धर्म से सम्बन्धित है। अन्जता से मिलते जुलते चित्र यहां बने है। यहां के प्रसिद्ध चित्रों में "कुलीन महिला का पुष्प लिए" चित्रित है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

**एलोरा गुफा–** भारतीय कला एंव धर्म का सम्बन्ध एलोरा गुफा से मिलता है। एलोरा को वेरूल के नाम से भी जाना जाता है। यह महाराष्ट्र के औरगाबाद जिला में स्थित है यहा 34 गुफाए क्रमशः 1 से 12 (बौद्ध धर्म से 6 वी से 8 वी शती) और 13–29 (हिन्दू गुफा 7 वी से 10 सदी) और 30–34 (जैन गुफा 9 वी से 12 वी सदी) बनी है। इसका निर्माण राष्ट्रकूट वंश ने करवाया। बौद्ध धर्म से बनी गुफा का संबंध वज्रयान शाखा से है।

**बौद्धकला की चित्रकला के अन्य प्रमाण पत्र–** गुप्त राजाओं की शक्ति व राज्य विस्तार के साथ ही कला के क्षेत्र में भी प्रगति हुई है। गुप्त राजाओं ने बौद्ध धर्म पर कोई रोक नही लगाई, परन्तु, जब उससे पहले के समय में जब बौद्ध दो सम्प्रदाय में बटा, तो बौध धर्म को बहुत हानि हुई। फाहियान और हेन्सांग ने बौद्ध धर्म का बहुत प्रचार–प्रसार किया।

**उपसंहार–** इस प्रकार बौद्ध कला ने एशिया के भू–भाग की कला चेतना को कई शताब्दियों तक प्रभावित किया। अपने देश में धार्मिक तथा सास्कृतिक उत्थान को सुदूर देशो में पहुचाने का कार्य बौद्धकला में मध्यम से ही सम्प्रन्न हुआ शान्ति और सदभाव की स्थापना में बौद्धकला का महत्वपूर्ण योग रहा। जन सामान्य में कल्याणकारी बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए बौद्धकला को श्रेष्ठ माध्यम के रूप में अपनाया गया। बौद्धकला में चित्र स्थाप्तय और शिल्प का संगम है यहां पर बने मठ, विहार सभी बौद्ध धर्म के उज्जवल अतीत के साक्षी है। कदाचित इसी कारण से इतनी सदियां बीत जाने पर भी बौद्धकला के प्रचार और प्रसार में अन्तर नही आया।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. गैरोल, वाचस्पति, भारतीय चित्रकला, मित्र प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ0सं0– 113, 115, 120, 121, 122.
2. वर्मा, डा0 अविनाश बहादुर, भारतीय चित्रकला का इतिहास, प्रकाश प्रकाशन, बरेली पृ0स0 42, 43 44,46,90,
3. प्रताप, डा0 रीता, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर पृ0स0 524.
4. भारती, डा0 मीनाक्षी मासलीवाल, भारतीय मूर्ति शिल्प एवं स्थापना कला, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर पृ0स0 80,7,3,74,75,76,81.
5. कुमारी राखी, सहायक प्राध्यापिका, पटना विश्वविद्यालय, भारतीय चित्रकला में बुद्ध ISSN: 245-5474.

*****